

पुत्रमुद्दर्शनेन चायुष्मान्वर्धते ÇĀK. 108, 14. VIKR. 11, 11. MĀRK. P. 110, 8. दिष्ट्या वर्धसि धर्मज्ञ साम्राज्यं प्राप्तवानसि MBH. 2, 1604. 1632. 5, 542. 7, 6452. R. 7, 1, 28. वर्धय MĀRK. P. 18, 47. वर्ध लमनया सार्धं धनपुत्रमुखा-युषा 21, 77. धर्मेण वर्ध लं नास्मान्दिक्षितुमर्हसि MBH. 1, 7864. दिष्ट्या वर्धसि गोविन्द अनिरुद्धसमागमात् HARIV. 10887. — 3) infin. वर्धे zum Wachsthum, — Gedeihen; zur Begeisterung, zum Ergötzen: लं त्राता वमुं नो वर्धे भूः RV. 1, 178, 5. 4, 2, 18. 23, 2. प्र शंसति नमसा ज्ञतिर्भिवर्धे 3, 3, 8. स क्वाता यस्य रोदसी पञ्च पञ्चमभि वर्धे गृणीतः 6, 10. 6, 33, 4. उत्तै-धिं प्तुसु नो वर्धे 46, 3. 11. 8, 3, 1. 13, 3. 27, 4. आपिं नन्तामहे वर्धे 49, 10. स्यामं मरुत्वतो वर्धे 52, 10. 86, 11. VĀLAKH. 6, 5. तुभ्यं नरति दिष्ट्या आपो वर्धे AV. 11, 2, 24. Eben so वर्धसे : स्वे तये मघोनां सखीनां च वर्धसे RV. 5, 64, 5. — 4) eine Verwechslung mit वर्त् ist vielleicht anzunehmen in folgenden Stellen: ततः समाज्ञा वर्धे स राजन्दिवसान्बाहून् MBH. 1, 6972 (vgl. वर्तमाने समाज्ञे 6973). ततो विवाहे विधिवद्वर्धे मात्स्यपार्थ-योः 4, 2362. रामेण चेद्राजमेन्द्र वर्धते तव विप्रकः R. 3, 41, 3. ततो ऽभिषे-को वर्धे शत्रुघ्नस्य 7, 63, 13. उत्सवाश्च समाज्ञाश्च वर्धते (v. l. वर्तते) Spr. 4415, v. l. सच्चं हि वर्धते तस्य सदेवभयदक्षिणाम् MBH. 8, 303. स्वनेन वर्धमानेन R. 2, 97, 4. 3, 34, 4. यज्ञविघ्नकरी यती पुरा वर्धते (oder an Macht gewinnen) मायया R. SCHL. 1, 28, 20. धर्मे ते वर्धतां बुद्धिर्मा चाधर्मे मनः कृ-थाः MBH. 3, 15799.

— caus. 1) वर्धयति, अवीवृधत् P. 7, 4, 8, Schol. a) erhöhen, grösser —, wachsen machen, mehren, fördern: अयं सहे वर्धया क्षुप्रमिन्द्र RV. 1, 103, 2. वीरम् 118, 2. इमा हि वामसौ वर्धयति 2, 11, 1. 4. वाणीम् 8. वा-चम् 9, 97, 36. ये वर्धयति पृथ्व्यं नित्याः 2, 27, 12. अथा नो वर्धया गिरः 3, 29, 10. आयुः 62, 15. 5, 11, 5. शोषधीः 62, 3. (सरस्वती) पञ्च ज्ञाता वर्धय-त्ती 6, 61, 12. रयिम् 7, 36, 7. राष्ट्रम् AV. 3, 19, 5. mit gen.: स्तोतारमिन्म-घवन्नस्य वर्धय lass den Lobesänger davon geniessen, sich daran ergötzen RV. 8, 86, 1. — ज्ञातमात्राय यः सद्य इष्ट्या देहमवीवृधत् MBH. 1, 2210. R. 5, 56, 58. स्वमांसं परमासेन M. 5, 52. एकैकं क्रासयेत्पिण्डं कृत्ते प्रुक्ते च वर्धयेत् 11, 216. वर्धितेधना (so die neuere Ausg.) HARIV. 7039. पूरं पयोधेः Spr. 1813. वर्धयन्निव तत्कृतानुद्धैर्धातुगोभिः RAGH. 4, 71. श्रेष्ठः कुलं वर्धयति विनाशयति वा पुनः M. 9, 109. रक्षितं वर्धयेत् Spr. 233. fg. काशं काकि-न्या 3228. R. 1, 7, 7. Schol. zu KĀTJ. ÇA. 446, 17. अघाहानि verlängern M. 8, 84. रात्रयो ब्रह्मणा वर्धिताः Schol. zu NAIŠH. 22, 57. महोत्सवः — भूरिवासर्वर्धितः KATHĀS. 23, 86. शब्दं तोयसंरम्भवर्धितम् verstärkt R. 1, 26, 5. क्रमशो वर्धयस्तपः M. 6, 23. प्रीतिम् MBH. 1, 4795. तेजो बलं च देवानां वर्धयति अयं तथा 7661. शोकम् 3, 2330. 13, 811 (med.). 13, 4722 (med.). R. GORR. 2, 38, 28 (med.). 123, 19. 7, 99, 19 (med.). 106, 4. KĀM. NĪTIS. 13, 34. Spr. 3189. 4478 (med.). 4542. MĀRK. P. 16, 65 (med.). DA-ÇĀK. 87, 8. LA. (III) 90, 2. कर्म fördern MBH. 14, 2300. वर्धिताशेषस्वा-नुसर्गं blühend BĀG. P. 4, 23, 1. grossziehen, aufziehen: शिशुम् RV. 10, 4, 3. HARIV. 9222. KATHĀS. 2, 32. 27, 103. 61, 266. नारी नाम विषाङ्कुरै-रिव लता देषिः समं वर्धिता Spr. 75 (II). ÇĀK. 51, v. l. ये वर्धिताः कन-कपङ्कुरेषुमध्ये कलकंसपोताः aufgewachsen Spr. 2520. ये वर्धिताः करि-कपोलमदेन भृङ्गाः 2521. बालमन्दारवृत्तः MEGH. 73. Jmd gross machen, zur Macht verhelfen, in die Höhe bringen AV. 2, 6, 1. 6, 5, 3. ÇĀT. BR. 1, 6, 3, 13. MBH. 2, 1632. वर्धयात्मानमात्मना HARIV. 3534. Spr. 438. 440. 862. 1375. 1828. KĀM. NĪTIS. 5, 69. fg. RĪĀG-TAR. 4, 493. तं (जनपदं) व-

VI. Theil.

वर्धयेत्प्रयत्नेन hegen, pflegen KĀM. NĪTIS. 4, 56. med. mit medialer Bedeu- tung: प्रजो वर्धयमानः sich seine Nachkommenschaft mehrend RV. 1, 125, 1. तन्वम् 10, 39, 5. वर्धित = पूर्ण und प्रसृत (प्रसित MED.) H. an. 3, 291. fg. MED. t. 149. — b) erheben, freudig erregen, ergötzen: सोमं गीर्भिष्ठा वयं वर्धयामः RV. 1, 91, 11. 36, 11. 190, 1. अस्मान्स्व पृत्स्वा तं हूत्रावर्धया यो बृहद्विरकेः 2, 11, 15. ब्रह्मणा इन्द्रं मरुयतो अर्कैर्वर्धयन्नक्ये कृत्वा उ 5, 31, 4. 6, 44, 5. गीर्भिर्भी रूद्रं दिवा वर्धया रूद्रमक्ता 49, 10. सूनताभिः 1, 123, 3. हृतस्य मा प्रदिशो वर्धयति 8, 89, 4. AV. 1, 9, 3. वषट्कारेण यज्ञम् 5, 26, 12. प्रजापतिं कृविषा वर्धयति TBR. 3, 1, 1, 2. 2, 1. कृत्वा जयाशिषा वर्धयित्वा HARIV. 5404. 9222. MBH. 14, 2650. R. 2, 34, 5. 6, 5, 17. 12, 15. 7, 23, 3. 44, 4. G. KATHĀS. 108, 9. 110, 119. यज्ञैर्वृविधैर्देवानवर्धयानस्य R. 7, 99, 19, v. l. इष्ट्या देवीमवीवृधत् MBH. 1, 2210 (eine von NILAK. er- wähnte Lesart). वावृधये infn.: सुवृत्तिभिः सूरिं वावृधये RV. 1, 61, 3. 122, 2. गीर्भिर्मित्रावरुणा वा 6, 67, 1. 10, 99, 1. med. sich erregen u. s. w.: अवीवृधत् गोतंमा इन्द्रं वे स्तोमवाहसः begeisterten sich in dir 4, 32, 12. अस्तौढु स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधधम् ergötztet euch an 124, 13. अवी- वृधत् पुरोडाशैः thaten sich gütlich an VS. 21, 60. TBR. 2, 6, 45, 2 (vgl. ÅCV. ÇA. 6, 11, 5). ÇĀT. BR. 1, 9, 1, 9. 10. — 2) वर्धापयति freudig erregen u. s. w. HARIV. 10886. 10906 (वर्धाप्य die neuere Ausg.). — वर्धित s. auch bes.

— desid. विवर्धयते und विवृत्सति P. 1, 3, 92. 7, 2, 59. Schol. zu 1, 2, 10. — intens. वरोवृधते, वरोवृधति P. 7, 4, 90. Schol. — अति med. hinauswachsen über (acc.) ÇĀT. BR. 1, 8, 1, 3. अतिवृद्ध (अति + वृद्ध) sehr gross: प्रमाणेन R. 1, 28, 3. वन 5, 17, 6. sehr heftig: काय MBH. 6, 3768. वयसा sehr alt MĀRK. P. 61, 11. — अधि med. sich wohlbefinden bei (loc.) RV. 9, 75, 1. — अनु 1) act. in der dunklen Stelle अनु श्रुताममतिं वर्धदुर्वीम् RV. 5, 62, 5. — 2) med. nachwachsen, heranwachsen, allmählich zunehmen RV. 5, 44, 1. न वै ज्ञातं गर्भं योनिरनु वर्धते ÇĀT. BR. 10, 2, 3, 6. महामीनो ऽन्ववर्धत er wuchs zu einem grossen Fische heran BĀG. P. 8, 24, 21. स्नेहो ऽन्ववर्धत 6, 14, 36. — 3) अनुवृद्ध in der Stelle वेदवादानुवृद्धानि वर्धासि VP. bei MUIR, ST. I, 147 fehlerhaft für अनुवृत्त. — caus. aus- dehnen nach Etwas ÇĀT. BR. 10, 2, 3, 6. grossziehen: (शिशुम्) रसायनप्र- योगैश्च शीघ्रमेवान्ववर्धयत् (एव ऽव्यवर्धयत् die neuere Ausg.) HARIV. 9220. — अभि 1) heranwachsen, stärker —, grösser werden, zunehmen; sich ausdehnen —, hinauswachsen über (acc.): विद्या भुवना RV. 2, 17, 4. वर्धस्व पत्नैर्भि ज्ञीवो अंधरे 5, 44, 5. ज्ञायो रसेनाभि वर्धताम् übertreffen AV. 6, 78, 1. 2. 1, 29, 1 (vgl. RV. 10, 174, 1, wo das Richtige). मरुश्शिद-भ्यवर्धत so gross er war, wuchs er noch RV. 9, 47, 1. अर्परमितं वीर्यम- भिवर्धते ÇĀT. BR. 2, 1, 3, 17. 13, 4, 2, 2. — तत्पीवा तीरमेकाङ्गा स कुमारो ऽभ्यवर्धत R. GORR. 1, 39, 29. लीणाः लीणो ऽपि शशी भूयो भूयो ऽभिवर्धते Spr. 788. (कामः) कृविषा कृत्स्नवर्मेव भूय एवाभिवर्धते 1377. M. 9, 318. द्यूते रगो भूयो ऽभिवर्धते MBH. 3, 2285. सर्वप्राणिनां बलमभिवर्धते SUÇA. 1, 19, 14. 128, 8. MBH. 3, 10857. अभिवर्धति चाधर्मः HARIV. 2307. वार्यमा- णस्य वाङ्मूहं हि विषयेष्वभिवर्धते KATHĀS. 31, 91. तस्य रायं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते R. 4, 28, 11. दातारो नो ऽभिवर्धता वेदाः संततिरेव च zu- nehmen, gedeihen M. 3, 259 (JĀĀN. 1, 245). लोकः KĀM. NĪTIS. 4, 21. राजा त्रिवर्गेण nimmt zw an, wird reicher an M. 7, 27. तपसा R. 1, 65, 10. —

